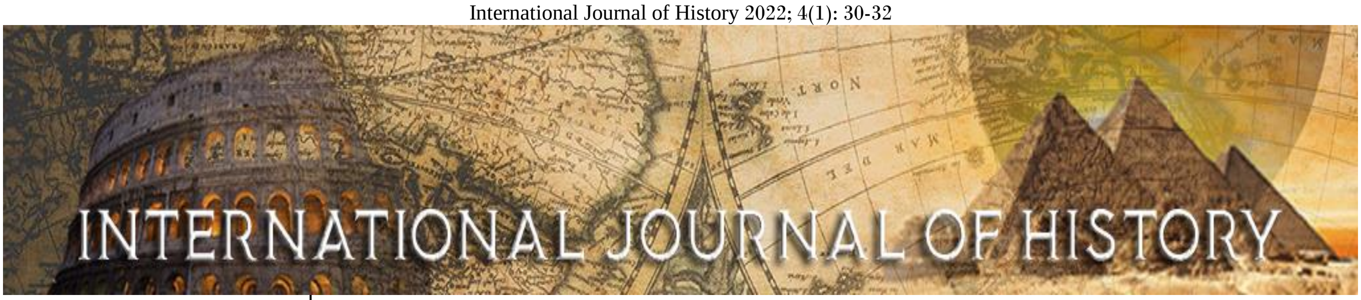

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(1): 30-32
Received: 07-11-2021
Accepted: 22-12-2021

रोशन राज
शोधार्थी छात्र, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग भू0 ना0 मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

डॉ. चंद्र प्रकाश सिंह
इतिहास विभाग, पी. जी. सेन्टर, पश्चिमी परिसर, सहरसा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रोशन राज
शोधार्थी छात्र, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग भू0 ना0 मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

बौद्ध धर्म का सामाजिक आयाम, उद्भव, प्रभाव एवं पतन : मिथिला और नेपाल के परिप्रेक्ष्य में

रोशन राज, डॉ. चंद्र प्रकाश सिंह

सारांश
प्राचीन भारत, नेपाल तथा मिथिला के इतिहास में बौद्ध धर्म का उद्‌भव एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में पहचाना जाता है। इसके संस्थापक गौतम बुद्ध हैं, जिन्होंने गृह त्याग करके एक चिन्तनशील व्यक्ति होने का सामाजिक उत्तरदायित्व निभाया। उनके गृह त्याग की घटना इतिहास में 'महाभिष्क्रमण' के नाम से जानी जाती है। चूंकि उन्होंने सर्वप्रथम ज्ञान प्राप्ति के लिए दो ऋषियों से भेंट की परन्तु उन्हें शान्ति प्राप्त नहीं हुई। अतः उन्होनें उरूवेला नामक जगह पर निरंजना नदी के तट पर कठोर तप किया। यहाँ भी उन्हें असफलता ही हाथ लगी। उन्हें वास्तविक ज्ञान 35 वर्ष की आयु में बोधि वृक्ष के नीचे हुआ। इसके बाद उन्होंने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया जिसे भारतीय इतिहास में धर्मचक्र परिवर्तन कहा जाता है। उनके प्रयासों से बौद्ध धर्म विदेशों तक फैल गया और उनकी भारतीय दर्शन और चिन्तन की देन एक ऐतिहासिक विरासत बन गई। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत में बौद्ध धर्म के उद्भव, प्रभाव एवं पतन पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्दः बौद्ध धर्म, गृह त्याग, ज्ञान प्राप्ति, उपदेश, धर्मचक्र परिवर्तन, महानिर्वाण

भूमिका
वस्तुतः बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महान गौतम बुद्ध थे जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व का न केवल भारतीयों पर बल्कि भारत के बाहर भी व्यापक प्रसार हुआ।[1] मिथिला और नेपाल का प्राचीन इतिहास और संस्कृति सतरंगी और समृद्ध रही है। इन क्षेत्रों को बौद्ध धर्म के प्राचीन प्रभाग ने विभिन्न काल खंडों में गंभीर रूप से प्रभावित किया है। खास कर मिथिला और नेपाल का सामाजिक जीवन धर्म से काफी प्रभावित हुआ है। मिथिला और नेपाल के इतिहास में अभिरूची रहने के कारण आंचलिक विषय पर अनुसंधान करने की प्रेरणा मिली है। बौध धर्म विश्व का प्रथम लोकतांत्रिक धर्म है। महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था और वे अत्यंत एकांतप्रिय तथा चिन्तनशील व्यक्ति थे। उनका बाल्यकाल में पालन–पोषण उनकी विमाता तथा मौसी प्रजापति ने किया। 18 वर्ष की आयु में उनका विवाह राजकुमारी यशोधरा से कर दिया गया। उनको एक पुत्र रत्न की प्राप्ति होने पर अहसास हुआ कि वे प्रतिदिन सांसारिक मायाजाल में फंस रहे हैं। इसी बीच संयोगवश उन्होंने एक वृद्ध व्यक्ति, एक रोगी तथा एक मृतक को देखा। यहीं से वे सांसारिक मोह छोड़कर अपने राजसी ठाट–बाट का त्याग करके नगर से बाहर चले गए। उनके गृह परित्याग की यह घटना महाभिष्क्रमण के नाम से इतिहास में जानी जाती है। इसके बाद उन्होंने सत्य और ज्ञान की तलाश में आलार और उदक नाम के दो ऋषियों से भेंट की, परन्तु उन्हें शांति नहीं मिली तो वे उरूवेला नामक जगह पर निरंजना नदी के तट पर अपने पांच साथियों सहित कठोर तप में लीन हो गये। इससे भी उन्हें ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ तो वे तपस्या का मार्ग छोड़कर अपने पांच साथियों के बिना ही नगर से बाहर चले गए। कुछ समय के बाद उन्हें ज्ञान प्राप्ति हुई और वे बुद्ध कहलाए। इस तरह उन्हें 35 वर्ष की आयु में बुद्धत्व की प्राप्ति हुई और जिस वृक्ष के नीचे उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ, वह वृक्ष 'बोधि– वृक्ष' कहलाया।[2] आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अनुसार ''साक्ष्य वह रेखांकन है जो अतीत अथवा वर्त्तमान कालिक घटना से संम्बद्ध ज्ञान की प्राप्ति में सहायक सिद्व हो सके''। निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि किसी घटना का क्रमवद्ध ज्ञान प्रदान करने वाले रेखांकन को साक्ष्य कहा जाता है। रेखांकन घटना का वह केन्द्र बिन्दु है जहॉं से साक्ष्य संकलन अपना कार्य प्रारंभ करता है। सामान्यतः तथ्यों को ही साक्ष्य कहा जाता है। साक्ष्यों का अन्वेषण नहीं अपितु खोज की जाती है। एक साक्ष्य की सत्यता की जानकारी हेतु कई साक्ष्यों के विश्लेषण की आवश्यकता पड़ती है। घटना का ज्ञान सम्यक एवं सम्पूर्ण रूप से होना चाहिए, अन्यथा न तो सहायक साक्ष्य ढूढे जा सकेंगे और न ही ठीक से उसका मूल्यांकन हो सकेगा। साक्ष्यों की विश्वसनियता की जॉच शोध अध्येता करता है और इतिहासकार उसकी व्याख्या करता है।

तथ्य की व्याख्या के भी शोध अध्येता के कई दृष्टिकोण होते है। व्याख्या किसी घटना एवं उसके कारणों की खोज को स्पष्ट करती है अतएव एक अर्थ में स्पष्टीकरण को व्याख्या भी कह सकते है। शोध अध्येता को अपने स्पष्टीकरण में इतनी स्वतंत्रता नहीं होती है कि वह किसी एक पक्ष को लें और दूसरे को त्याग दें। उसको दोनो ही पक्षों को लेना पड़ता है।

बौद्ध धर्म का प्रचार– अपने बुद्धत्व के पश्चात गौतम बुद्ध ने सारनाथ में अपने पांच भिक्षु साथियों को पहला उपदेश दिया जो पांचों शिष्य भारतीय इतिहास में पंचवर्गीय नाम से जाने जाते हैं।[3] धीरे–धीरे उनके शिष्यों की संख्या 30 पर पहुंच गई और गौतम बुद्ध ने एक संघ का निर्माण कर लिया। धीरे–धीरे इस संघ की प्रतिष्ठा बढने लगी और संघ में प्रवेश करने वाले व्यक्ति की यह शपथ अनिवार्य कर दिया गया कि मैं बुद्ध, धर्म, और संघ की शरण में जाता हूँ। बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए महात्मा बुद्ध कपिलवस्तु भी गए और अपने पुत्र राहुल और भाई नंद को भी संघ की शरण में ले लिया। इसके साथ–साथ उन्होंने अपने शिष्य आनन्द के विशेष अनुग्रह पर अपनी विमाता प्रजापति को भी संघ में शामिल कर लिया। तत्पश्चात महात्मा बुद्ध ने उत्तरप्रदेश, बिहार तथा नेपाल में अपने जीवन के शेष 45 वर्षों तक प्रचार किया। अंततः 80 वर्ष की आयु में 483 ई0पू0 कुशीनगर में महात्मा बुद्ध की मृत्यु हो गई। जिसे भारतीय इतिहास में 'महापरिनिर्वाण' की घटना कहा जाता है।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं– महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित शिक्षाएं इस प्रकार हैं–

1. महात्मा बुद्ध की दृष्टि में इस संसार में चार प्रमुख सत्य हैं– दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध, दुःख निरोध के उपाय।
2. महात्मा बुद्ध ने मोक्ष प्राप्ति के लिए अष्टांग मार्ग का सिद्धान्त दिया है।[4] उनकी दृष्टि में ये आठ मार्ग हैं– सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति तथा सम्यक् समाधि।
3. महात्मा बुद्ध ने नैतिक आचरण के 10 शील बताये हैं जो इस प्रकार हैं– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, उपरिग्रह, ब्रह्मचर्य व्रत, संगीत और नृत्य का त्याग, अंजन, फूल व सुगंधित द्रव्यों का त्याग, असामाजिक भोजन का त्याग, कोमल शैय्या का त्याग, कामिनी और कंचन का त्याग।
4. बौद्ध धर्म कर्म के सिद्धान्त को स्वीकार करता है।[5] इस धर्म के अनुसार मनुष्य इस संसार में रहकर जैसे कर्म करता है वैसा ही फल भोगना पड़ता है।
5. महात्मा बुद्ध ने ईश्वर तथा आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करते हुए पुनर्जन्म में विश्वास व्यक्त किया है। बौद्ध साहित्य के अनुसार महात्मा बुद्ध के सहस्रों जन्मों का उल्लेख आता है।
6. महात्मा बुद्ध अनीश्वरवादी थे। जब उनसे ईश्वर की सत्ता के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कभी नहीं कहा कि ईश्वर है या नहीं है।
7. महात्मा बुद्ध ने जाति प्रथा का कठोर विरोध किया[6] और सामाजिक समानता का उपदेश दिया। यही कारण है कि धीरे–धीरे सभी जाति व धर्म के लोग बौद्ध धर्म में शामिल हो गए।
8. महात्मा बुद्ध ने उन्हीं विषयों पर उपदेश दिया जो मानव मात्र के कल्याण से सम्बन्धित थे।
9. उनका वेदों तथा संस्कृत भाषा की पवित्रता में अविश्वास था। उन्होंने लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए वेदों की बजाय तर्क का सहारा लिया तथा अपने सभी उपदेश पाली भाषा में दिये।
10. बौद्ध धर्म के अनुसार मानव का प्रमुख लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति है।[7] अन्य धर्मों के अनुसार निर्वाण प्राप्ति केवल मृत्यु के बाद ही संभव होती है परन्तु बौद्ध धर्म के अनुसार यह इसी जीवन में संभव है।

बौद्ध संघ व्यवस्था– महात्मा बुद्ध ने देश–विदेश में घूमकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया और उनकी सुविधा के लिए उनके शिष्यों ने कई स्थानों पर मठ या विहार निर्मित किये, जिन्हें संघ कहा जाता है। संघ में रहने वाले लोग भिक्षु कहलाते थे और वे भिक्षा पर ही अपना जीवन यापन करते थे। प्रारम्भ में केवल पुरुष ही संघों के सदस्य थे, लेकिन बाद में महिलाओं के लिए भी अलग से संघ बना दिये गए। महात्मा बुद्ध ने प्रारम्भ में स्वयं लोगों को संघ में प्रवेश करवाया। संघ में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक शपथ लेना अनिवार्य था। मठ को संघ की सामूहिक सम्पति माना जाता था तथा भिक्षुओं को केश कटवाकर गेरूए रंग के वस्त्र धारण करने पड़ते थे। बौद्ध धर्म के अनुयायी श्रृंगार व सौन्दर्य प्रसाधनों से दूर रहते थे तथा दिन में केवल एक बार भोजन करते थे। वर्षा ऋतु में वे केवल एक स्थान पर रहकर ही बौद्ध धर्म के प्रचार व प्रसार की बात करते थे जो भिक्षु धर्म के नियमों का उल्लंघन करता था, उसे दण्ड देने की व्यवस्था भी थी।[8] कई बार तो गंभीर अपराध में भिक्षु को संघ से बाहर का मार्ग भी दिखा दिया जाता था। संघ में भ्रष्टाचार रोकने के लिए महिलाओं के लिए अलग से मठ बनाये गए थे तथा संघ का संगठन लोकतंत्रीय था। संघ में अनुशासन पर विशेष बल दिया जाता था, तथा मतभेद की स्थिति में शान्तिपूर्ण समाधान बातचीत के जरिये कर लिया जाता था। विवादाग्रस्त विषय पर निर्णय बहुमत से मतदान प्रणाली के द्वारा ले लिया जाता था।

बौद्ध धर्म का प्रभाव– बौद्ध धर्म प्राचीन काल में भारत का प्रमुख धर्म था, जिसके निम्नलिखित प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैंः–

इससे देश के विभिन्न भागों में एकता और राष्ट्रीयता की भावना पैदा हुई।

इसने अहिंसा के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए युद्ध भावना व हिंसा को ठेस पहुंचाई, जिससे समाज में शान्ति व प्रेम का वातावरण बना।

इसने विश्व शान्ति की शिक्षा दी। उदाहरण के तौर पर सम्राट अशोक ने युद्ध का मार्ग त्याग कर विश्वशांति की दिशा में कदम रखा।

जब बौद्ध धर्म के प्रचारक विदेशों में गए तो भारत के अन्य देशों से सम्बन्ध स्थापित हो गए और भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई।

बौद्ध धर्म की स्थापना के बाद भारत में अनेक बौद्ध ग्रन्थ लिखे गए जिससे भारत का धार्मिक साहित्य विकसित हुआ।[9]

इसने जातिप्रथा के बन्धन ढीले कर दिये और समाज में शान्ति एवं प्रेम का वातावरण पैदा हुआ।

इसने भारत के अन्य धर्मों के भी उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया और मूर्तिपूजा की शुरूआत भारत में हुई। धीरे–धीरे ब्राह्मण धर्म के अनुयायी भी देवी–देवता की मूर्तियां बनाकर पूजा करने लगे।

बौद्ध धर्म ने भारतीय साहित्य में पर्याप्त वृद्धि की जिससे आम जनता तक भी साहित्य पढने को मिला। त्रिपिटक तथा जातक कथाएं बौद्ध धर्म के साहित्य में महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

इससे मूर्ति निर्माण कला, भवन निर्माण कला, शिल्प कला, तथा चित्रकारी को प्राचीन भारत में बढावा मिला।[10] तत्कालीन समय के मन्दिर, स्तूप तथा गुफाएं इस बात की गवाही देती हैं कि बौद्ध धर्म ने कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बौद्ध धर्म ने मठों का निर्माण करके भारत की शिक्षा व्यवस्था को नया रूप दिया। इस बात के प्रमाण हैं कि नालन्दा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालय प्रारम्भ में बौद्ध विहार थे और विदेशों से भी विद्यार्थी यहाँ शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे।

इससे भारत की सभ्यता और संस्कृति को विदेश भूमि पर भी फैलने का अवसर प्राप्त हुआ।

बौद्ध धर्म का पतन– भारत में बौद्ध धर्म जितनी तेजी से फैला, उतनी ही तेजी से पतन के मार्ग पर भी चल पड़ा। इसका प्रमुख कारण हिन्दू धर्म में चलने वाली सुधार लहर थी तथा धीरे–धीरे बौद्ध धर्म को अशोक तथा कनिष्क के बाद राज्याश्रय व संरक्षण मिलना बंद हो गया तो इसका पतन होने लगा।[11,13] धीरे–धीरे बौद्ध भिक्षुओं के आचरण का भी पतन हो गया तथा बौद्ध विहार भ्रष्टाचार के अड्डे बन गए तथा संघ में महिलाओं के प्रवेश के बाद भ्रष्टाचार अधिक बढा। प्रारम्भ में महात्मा बुद्ध ने जिन बातों के विरोध में इस धर्म की स्थापना की थी, वे ही इस धर्म में आ गई। इसके साथ ही बौद्ध धर्म दो शाखाओं में बंट गया और आपसी फूट के कारण यह धर्म अवनति के मार्ग पर चल पड़ा। विदेशी आक्रमणों ने भी बौद्ध विहारों को काफी क्षति पहुंचाई तथा राजपूत काल में भी इसका पतन होना शुरू हो गया। महात्मा बुद्ध के बाद कोई महान व्यक्ति इसकी प्रेरक शक्ति नहीं बन पाया। बाद में बौद्ध धर्म ने पाली के स्थान पर संस्कृत भाषा को अपना लिया और यह जटिलता का शिकार हो गया।

सारांश– चूंकि बौद्ध धर्म अहिंसा पर आधारित धर्म रहा है, अतः आज भी यह विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करता है जो इसकी ऐतिहासिक देन मानी जा सकती है। इसके साथ–साथ बौद्ध संघों का संगठन भी लोकतंत्रीय रहा है तथा इसने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को विदेशी भूमि पर फैलने में अहम् भूमिका अदा की, फिर भी महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद यह धर्म पारस्परिक मतभेदों का शिकार हो गया और इसमें धार्मिक जटिलता आने के कारण तथा अयोग्य उत्तराधिकारियों के भ्रष्ट आचरण से यह धर्म धीरे–धीरे जनता की भावना से दूर होता गया। परन्तु इस धर्म ने भारतीय धर्म व दर्शन को काफी कुछ दिया है, जो आज भी भारतीय भूमि तथा विदेशों में एक लोकप्रिय धर्म माना जाता है।

सन्दर्भ सूची–

1. रमाशंकर त्रिपाठी, प्राचीन भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणासी, 1982.
2. विमलचन्द्र पॉण्डेय, प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस, इलाहबाद, 1992.
3. सुमन गुप्ता, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, स्वामी प्रकाशन जयपुर, 2000.
4. रोमिला थापर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास , ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.
5. शैलेन्द्र सेंगर, प्राचीन भारत का इतिहास, अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005.
6. डी.एन.झा, प्राचीन भारतः एक रूपरेखा, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005.
7. प्रशान्त गौरव, प्राचीन भारत– लगभग 600ई0 तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.
8. कैलाश खन्ना, प्राचीन भारत का इतिहास, भाग–1, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2010.
9. बी.स्टेन, ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, नई दिल्ली, 2012.
10. ए.एस.डूडी, एन्सियंट हिस्ट्री ऑफ इंडिया, नेहा पब्लिशर्स , दिल्ली, 2012.
11. रणबीर चक्रवर्ती, भारतीय इतिहास का आदिकाल– प्राचीनतम पर्व से 600ई0 तक, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, दिल्ली, 2012.
12. अबुस्सलाम, भारतीय इतिहास, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.
13. सोहन राज तातेड़, प्राचीन भारत का आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास, भाग–1, खण्डेलवाल पब्लिशर्स, जयपुर, 2015